अमृतलाल नागर

"मैं उस चींटीकी तरह हूँ
जो बार बार गिरने से भी चढ़ती है।"

जन्म तिथि : 17 अगस्त 1916

मृत्यु तिथि : 22 फरवरी 1990

प्र मा ण प त्र

मैं संस्तुति करता हूँ कि इस लघु शोध प्रबंध को परीक्षा हेतु अग्रेसित किया जाए ।

दिनांक 30 / दिसम्बर 1996

डा.पांडुरंग पांटील
अध्यक्ष हिन्दी विभाग
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

डा. शंकर वसंत मुदगल
एम. ए. (हिन्दी)एम. ए. (मराठी)
साहित्य रत्न, पी. एच. डी. (हिन्दी)
उपप्राचार्य, रीडर एवं हिन्दी विभागाध्यक्ष,
स. भू . एस. के पाटील महाविद्यालय,
कुरुंदवाड, जि. कोल्हापूर.

प्र मा ण - पत्र

मै. प्रमाणित करता हूँ कि **श्री शशिकांत रामचंद्र कुलगुडे** ने शिवाजी विश्वविद्यालय की एम. फिल (हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु - शोध प्रबंध " अमृतलाल नागरजी की कहानियों में **चित्रित समस्यांएँ** " मेरे निर्देशन में सफलता पूर्वक पूरे परिश्रम के साथ पूरा किया है । यह कार्य पूर्व योजनानुसार संपन्न हुआ है । यह परीक्षार्थी की मौलिक कृति है । श्री शशिकांत रामचंद्र कुलगुडे के प्रस्तुत शोध - कार्य के बारे में मैं पूरी तरह संतुष्ट हूँ ।

कुरुंदवाड

दिनांक **30** / दिसंबर / 1996

(डा. शंकर वसंत मुदगल)
शोध निर्देशक

प्र ख्या प न

यह लघु - शोध प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम.फिल. के लघु शोध प्रबंध के रुप में प्रस्तुत की जा रही है । यह रचना इससे पहले इस विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है ।

आलास

दिनांक 30/ दिसंबर / 1996

(श्री शशिकांत रामचंद्र कुलगुडे)

शोध छात्र

प्रा क्क थ न

प्रा क क थ न

एम.ए.के अध्ययन के उपरान्त मैंने शोधकार्य करने का संकल्प किया। शोधकार्य के लिए मैं ऐसे लेखक का चुनाव करना चाहता था, जो समाज की गहराइयों में जाकर लोगों की पीड़ा एवं दर्द को महसूस करनेवाला हो, जो मानवतावादी एवं गांधीवादी विचारधाराके पोषक हो, जिसने अपनी अनुभूति से साहित्य का सृजन किया हो । ऐसे साहित्य का चयन करना मेरे लिए मुश्किल था । संयोगवश एक दिन मैं विश्वविद्यालय के ग्रंथालय में किताबों की परख कर रहा था कि मेरे हाथ अमृतलाल नागरजी का 'सिकंदर हार गया' इस कहानी का संग्रह प्राप्त हुआ । मैंने इस संग्रहकी कई कहानियां पढ़ी तो उनके साहित्य में मुझे सजगता एवं सोदेश्यता दिखाई पड़ी ।

अमृतलाल नागर स्वातंत्रपूर्व लेखक होने के साथ साथ हास्य व्यंग्य के सिध्दहस्त लेखक भी हैं । उनके व्यक्तित्व की तरह उनका कृतित्व भी विविधमुखी है । उन कृतियों में भारतके समाज, इतिहास और संस्कृति की बहुरंगी छबियां उजागर हुई हैं । उनका पर्यवेक्षण सर्वत्र मौलिक और अनुपम है । बहुमुखी लेखक के रुप में नागरजीने कहानी, उपन्यास, नाटक, रेखाचित्र, जीवनी, सर्वेक्षणकार्य, और व्यंग्य वार्तायें आदि अनेक विधाओंपर कलम चलाई है । उनके साहित्य की विविधता, सम्रता और प्रासंगिकता से प्रेरित, पुलकित और प्रभावित होकर मैंने विषयपर शोधकार्य करनेका दृढसंकल्प किया ।

एक दिन मैंने हिन्दी विभागाध्यक्ष डा. पांडुरंग पाटीलजी और डा. अर्जुन चव्हाणजी से विषय चयन के बारेमें उनके सामने अमृतलाल नागरजी के साहित्यपर शोधकार्य करनेका प्रस्ताव किया । तो उन लोगोंने मुझे इस पर लघु शोध प्रबंध प्रस्तुत

करने के लिए प्रोत्साहित किया । तब मेरा हौसला बढ़ गया । मैंने उसी दिन ' अमृतलाल नागरजीकी कहानियोंमें चित्रित समस्याएँ यह विषय निश्चित किया । जब मैंने इस विषयका प्रस्ताव मेरे श्रध्येय गुरु डा.शंकर वसंत मुदगलजी के सम्मुख रखा तो आपने भी इसे तुरन्त स्वीकृती दे दी तथा इस विषय को लेकर हम दोनों में चर्चा भी हो गयी।

अनुसंधान की सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने लघु-शोध-प्रंबंध को चार अध्यायों में बाटा है ।

प्रथम अध्याय : 'अमृतलाल नागरजीका व्यक्तित्व एवं कृतित्व '। किसीभी रचनाकार के साहित्यपर शोध कार्य करते समय उन के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन आवश्यक है । इस अध्याय में मैंने नागरजी के व्यक्तित्व विश्लेषण में जन्म, बचपन, माता-पिता, शिक्षा, जीवन संघर्षों में अपराजित योध्दा का समग्र विवेचन किया है । उनके कृतित्व के अंतर्गत कहानी साहित्य, उपन्यास साहित्य पर प्रकाश डाला है ।

द्वितीय अध्याय : 'हिन्दी कहानीका विकास और अमृतलाल नागर '। इस अध्याय के अंतर्गत मैंने हिन्दी कहानीका समग्र विश्लेषण उसके साथ नागरजी का हिन्दी कहानी क्षेत्र में प्रवेश का चित्रण किया है । उनकी कहानी विषयक धारणाको स्पष्ट करते हुए उनकी कहानियोंका वर्गीकरण भी किया है ।

तृतीय अध्याय : अमृतलाल नागर की कहानियों की विशेषताएँ इस अध्याय के अंतर्गत मैंने अमृतलाल नागर की साहित्यमें चित्रित विशेषताओं का विवेचन किया है । इसके साथ-साथ शिल्पगत विशेषताएँ तथा निष्कर्ष को भी प्रस्तुत किया है ।

चतुर्थ अध्याय : 'अमृतलाल नागर की कहानियों में चित्रित समस्याएँ' इस अध्याय में मैंने सामाजिक समस्या, राजनितिक समस्या, आर्थिक समस्या एवं धार्मिक समस्या की चर्चा की है । सामाजिक समस्याके अंतर्गत अन्य गौण समस्याओं का विवेचन किया है । उसमें नारी समस्या, प्रेम समस्या, अंध:विश्वास की समस्या, निम्नवर्ग की समस्या एवं रंगभेद की समस्याओंका विवेचन किया है । अंत में निष्कर्ष दिया है ।

' उपसंहार ' में चारों अध्यायोंका निचोड प्रस्तुत किया है । परिशिष्टके अंतर्गत नागरजीका समग्र साहित्य आधारग्रंथ, संदर्भग्रंथ, पत्रपत्रिकाएँ एवं शब्दकोशकी सूची दी है ।

यह लघु - शोध प्रबंध श्रध्देय गुरूवर्य डा, शंकर मुदगल (उपप्राचार्य, रीडर एवं हिन्दी विभागाध्यक्ष,स.भू.एस के पाटील महाविद्यालय कुरुंदवाड, जि.कोल्हापूर) के उदार एवं प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के आत्मीय एवं प्रेरक निर्देशन का फल है । उन्होंने अपनी कार्यव्यस्तता के बावजूद भी समय-समय पर मेरे लेखक की त्रुटियों को दूर करके मुझे सही दिशा में मार्गदर्शन किया । उनके प्रति अपनी कृतज्ञता शब्दो में अभिव्यक्त करना मेरे लिए असंभव है ।

शिवाजी विश्वविद्यालय के हिन्दी प्रमुख डा.पी.एस.पाटील से मुझे प्रस्तुत अध्ययनमें बार-बार सुचनाएँ मिलती रही । डा.अर्जुन चव्हाण ने भी मुझे इस कार्य के लिए बार बार प्रेरित किया । साथ ही शिवाजी विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र के प्रपाठक डा.वसंत जुगले जी की इस कार्य के लिए खूब मदत मिली । इन सभी गुरूजनों के प्रति मैं कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ ।

इस शोधकार्य की पूर्णता का बहुत बड़ा श्रेय मेरे परिवार के सदस्यों को है। मेरे आदरणीय पूज्य पिताश्री श्री रामचंद्र भरमू कुलगुडे तथा श्रध्देय पूज्य माताजी श्रीमती शकुंतला की स्नेहमयी ममता सदैव मेरे साथ रही है ।

मेरे स्नेही मित्र विजय गावडे ने मुझे कार्य में सहयोग दिया !

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापूर, तथा स.भू. एस. के. पाटील महाविद्यालय, कुरुंदवाड के पुस्तकालय कर्मचारी के प्रति आभार प्रकट करता हूं ।

अंत में इस लघु- शोध- प्रबंध को अत्यंत कम समय में टंकित करनेवाले श्री विनायक कडवाले, इचलकरंजी को हार्दिक धन्यवाद देता हूं ।

(शशिकांत रामचंद्र कुलगुडे)

अ नु क्र म

प्राक्कथन

1. **प्रथम अध्याय** : अमृतलाल नागरजी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व । 1 — 36

अ) व्यक्तित्व : जन्म, बचपन, माता, पिता, शिक्षा, वैवाहिक जीवन, जीवन संघर्षो के अपराजित योध्दा ।

आ) कृतित्व : कहानी सृजन के विविध आयाम, कहानी साहित्य, उपन्यास साहित्य, नाटक, जीवनी, संस्मरण, सर्वेक्षण कार्य, व्यंग्य वातयि ।

निष्कर्ष ।

2. **द्वितीय अध्याय** : हिन्दी कहानी का विकास और अमृतलाल नागर । 37— 64

क) हिन्दी कहानी का विकास और अमृतलाल नागर ।

ख) अमृतलाल नागर का हिन्दी कहानी क्षेत्र में प्रवेश ।

ग) कहानी विषयक धारणाएँ ।

घ) अमृतलाल नागरजी की कहानियों का वर्गीकरण ।

निष्कर्ष।

3. **तृतीय अध्याय** : अमृतलाल नागर की कहानियोंकी विशेषताएँ । 65- 101

अ) अमृतलाल नागर की कहानियों में चित्रित विशेषताएँ : लखनवी जीवन के विविध अंगोंका चित्रण, गांधीवाद का प्रभाव, भ्रष्टाचार का यथार्थ वर्णन, चापलूसी प्रवृत्ति का अंकन, अफवाहें फैलाने की प्रवृत्ति का चित्रण, अंधश्रध्दा के विविध रुपों का चित्रण, व्यंग्य के माध्यम से यथार्थ का पर्दाफाश, स्त्री के विविध रुपों का चित्रण डाक्टरों की दयनीय स्थिति का अंकन, आधुनिक कालीन भक्तों की झूठी भक्ति का चित्रण, सामाजिक यथार्थ का चित्रण, अन्य विशेषताएं ।

आ) शिल्पगत विशेषताएं - कथागत विशेषताएँ, पात्र - चरित्र चित्रण, संवाद, देश काल वातावरण, भाषाशैली, उददेश्य, ।

निष्कर्ष ।

4) **चतुर्थ अध्याय** : अमृतलाल नागर की कहानियों में चित्रित समस्याएं । 102 - 142

अ) सामाजिक समस्या : नारी समस्या, निम्नवर्ग की समस्या, अंधविश्वास की समस्या, प्रेम की समस्या, रंग भेद की समस्या ।

आ) राजनीतिक समस्या :

इ) आर्थिक समस्या ;

ई) धार्मिक समस्या ;

निष्कर्ष ।

5) **उपसंहार** । 143 — 146

6) **परिशिष्ट** 147 — 153

अ) नागरजी का हिन्दी साहित्य

आ) हिन्दी आधार ग्रंथ

इ) संदर्भ ग्रंथ

ई) पत्र पत्रिकाएं

उ) शब्दकोश ।